शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2024
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हिन्दी भाषा अनुवाद और चुनौतियां

अश्विनी चौधरी (शोधार्थी)
डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन (निर्देशक)
(हिन्दी विभागाध्यक्ष)
सेवा सदन महाविद्यालय
बुरहानपुर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भारत में विभिन्न प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं। सभी भाषाओं का अपना साहित्य होता है। पाठक वर्ग भी होता है। पाठकों को दूसरी भाषा के साहित्य को जानने की जिज्ञासा होती है जो स्वाभाविक है। दूसरी भाषा के साहित्य को जानने, पढ़ने का एकमात्र उपाय है अनुवाद। इस क्षेत्र में बहुत सारी चुनौतियां हैं जिसका समाधान करना हमारा उद्देश्य है। एक भाषा साहित्य का अनुवाद दूसरी भाषा में करके साहित्य में समरूपता लायी जा सकती है। प्रस्तुत शोध पत्र में हिंदी अनुवाद और चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तावना

भारत में हिंदी भाषा का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। सूचना संचार क्रान्ति ने हिंदी भाषा को विदेशों तक पंहुचा दिया है। इसके पूर्व संस्कृत भाषा का साहित्य सुदुर देशों तक गया है। विदेशी साहित्यकारों ने संस्कृत के श्रेष्ठ साहित्य का अपनी भाषा में अनुवाद किया है। कल्याणमल लोढ़ा के अनुसार, "भारत में अनुवाद की परम्परा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। स्वात्र्योत्तर युग में इसकी आवश्यकता और सार्थकता अधिक प्रबल हुई है। यदि मानवता की परम्परा साहित्य की परम्परा है, तो भाषा और साहित्य उसके उद्गाता और संवाहक हैं। मानव-ज्ञान की उत्तरोत्तर और सतत गतिशीलता में अनुवाद की सम्पन्नता स्वतः सिद्ध है।" आज के युग में अनुवाद का महत्त्व बहुत बढ़ गया है। यह केवल भाषा के क्षेत्र तक सीमित न रहकर रोजमर्रा के जीवन में, रोजगार की दृष्टि से भी आवश्यक हो गया है।

विश्लेषण

किसी भाषा में कही या लिखी गयी बात का किसी दूसरी भाषा में सार्थक परिवर्त्तन अनुवाद कहलाता है। संस्कृत की 'वद्' धातु से 'अनुवाद' शब्द बना है। 'वद्' का अर्थ है बोलना। 'वद्' धातु में 'अ' प्रत्यय जोड़ देने पर भाववाचक संज्ञा में इसका परिवर्तित रूप है 'वाद', जिसका अर्थ है - 'कहने की क्रिया' या 'कही हुई बात। 'वाद' में 'अनु' उपसर्ग जोड़कर 'अनुवाद' शब्द बना है, जिसका अर्थ है - प्राप्त कथन को पुनः कहना। इसका प्रयोग पहली बार मोनियर विलियम्स ने अंग्रेजी शब्द ट्रांसलेशन के पर्याय के रूप में किया। इसके बाद ही 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग एक भाषा में किसी के द्वारा प्रस्तुत की गई सामग्री को दूसरी भाषा में पुनः प्रस्तुति के संदर्भ में किया गया। अनुवाद के लिए 'ट्रांसलेशन' शब्द

प्रयुक्त होता है। यह शब्द प्राचीन फ्रांसीसी शब्द ट्रांसलेटर से व्युत्पन्न है। इसका व्युत्पत्तिमूलक अर्थ है परिवहन - एक स्थान बिन्दु से दूसरे स्थान बिन्दु पर ले जाना। ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी शब्दकोश में इसका मुख्य अर्थ दिया है।

अनुवाद के लिए दो भाषाओं की आवश्यकता होती है - एक स्रोत भाषा तथा दूसरी लक्ष्य भाषा। स्रोत भाषा वह जिससे अनुवाद करना है और लक्ष्य भाषा वह जिसमें अनुवाद करना है।

अनुवाद का क्षेत्र

अनुवाद का क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है। सारी दुनिया को एक करने में, मानव-मानव को एक दूसरे के निकट लाने में, मानव जीवन को अधिक सुखी एवं सम्पन्न बनाने में अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। यह एक बहुत बड़ी सच्चाई है कि मनुष्य को परस्पर विभाजित करने वाली शक्तियों में भाषाओं की अहम् भूमिका है। 'भाषाओं की अनेकता' मनुष्य को एक-दूसरे से अलग ही नहीं करती, उसे कमजोर ज्ञान की दृष्टि से निर्धन और असंवेदनशील भी बनाती है। अनुवाद के क्षेत्र में शायद ही कोई क्षेत्र बचा हो जिसमें अनुवाद की उपयोगिता को सिद्ध न किया जा सके। इसलिये यह कहना अतिश्योक्ति न होगी कि आधुनिक युग के जितने भी क्षेत्र हैं सबके सब अनुवाद के भी क्षेत्र हैं, चाहे न्यायालय हो या कार्यालय, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी हो या सांस्कृतिक सम्बन्ध। इन सभी क्षेत्रों में अनुवाद की महत्ता एवं उपायदेयता को सहज ही देखा-परखा जा सकता है।

अनुवाद की आवश्यकता

भारत जैसे विशाल राष्ट्र की एकता के प्रसंग में अनुवाद की आवश्यकता है। भारत की भौगोलिक सीमाएं न केवल कश्मीर से कन्याकुमारी तक बिखरी हुई हैं बल्कि इस विशाल भूखंड में विभिन्न विश्वासों एवं सम्प्रदायों के लोग रहते हैं, जिनकी भाषाएं एवं बोलियां एक-दूसरे से भिन्न हैं, भारत की अनेकता में एकता इन्ही अर्थों में है कि विभिन्न भाषाओं, विभिन्न जातियों, विभिन्न विश्वासों के देश में भावनात्मक एवं राष्ट्रीय एकता कहीं भी बाधित नहीं होती। एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद की भाषा इसलिए भी है कि सारी दुनिया के लोग केवल साहित्य ही नहीं, बल्कि रीति-रिवाज, तीज-त्यौहार आदि की भी जानकारी रखने में रुचि लेने लगे हैं, जिससे कि व्यक्ति का व्यक्ति के प्रति भावनात्मक संबंध, संवेदनायें, परेशानियां आदि समझने व समझाने में आसानी होती है तथा मानव का मानव के प्रति घनिष्ठ सम्बन्ध हो जाता है। आज वैश्वीकरण के दौर में अनुवाद ही एक ऐसा माध्यम रह गया है, जिससे हम एक-दूसरे के साहित्य, संस्कृति, विचारों को, उपलब्धियों को पढ़ व समझ सकते हैं।

अतः -

1 संस्कृति के विकास में अनुवाद की आवश्यकता

2 साहित्य के अध्ययन में अनुवाद की आवश्यकता

3 व्यवसाय के रूप में अनुवाद की आवश्यकता

4 नव्यतन ज्ञान विज्ञान के क्षेत्रों में अनुवाद की आवश्यकता

अनुवाद की पद्धतियां : भाषा में अनुवाद की बहुत-सी पद्धतियां प्रचलित हैं जो इस प्रकार से है :

1 शब्दानुवाद - स्रोत भाषा के प्रत्येक शब्द का लक्ष्य भाषा के प्रत्येक शब्द में यथावत् अनुवाद को शब्दानुवाद कहते हैं। 'मसिका स्थाने मसिका' पर आधारित शब्दानुवाद वास्तव में अनुवाद की सबसे निकृष्ट कोटि का परिचायक होता है।

2 भावानुवाद - ऐसे अनुवादकों में स्रोत भाषा के शब्द, पदक्रम और वाक्य-विन्यास पर ध्यान न देकर अनुवाद मूलभाषा की विचार सामग्री को उपस्थित करना ही अनुवाद का लक्ष्य होता है।

3 छायानुवाद - इस अनुवाद के अतंर्गत अनुवाद न शब्दानुवाद की तरह केवल मूल शब्दों का अनुसरण करता है और न सिर्फ भावों का ही परिपालन करना है, बल्कि मूलभाषा से पूरी तरह बँधा हुआ उसकी छाया में लक्ष्यभाषा में वर्ण्य - विषय की प्रस्तुति करता है।

4 व्याख्यानुवाद - ऐसे अनुवादों में मूलभाषा की सामग्री का लक्ष्य भाषा में व्याख्या सहित अनुवाद उपस्थित किया जाता है। इसमें अनुवाद अपने अध्ययन और दृष्टिकोण के अनुरूप मूलभाषा की सामग्री की व्याख्या अपेक्षित प्रमाणों और उदाहरणों आदि के साथ करता है। लोकमान्य तिलक ने 'गीता' का अनुवाद इसी शैली में किया है।

5 आशु-अनुवाद - जहां अनुवाद दुभाषिये की भूमिका में काम करता है, वहां वह केवल आशु अनुवाद कर पाता है, दो दूरस्थ देशों के भिन्न भाषा-भाषी जब आपस में बात करते हैं तो उनके बीच दुभाषिया संवाद का माध्यम बनता है। ऐसे अवसरों पर वे अनुवाद शब्द और भाव की सीमाओं को तोड़कर अनुवाद की सत्वर अनुवाद क्षमता पर आधारित हो जाती है।

6 रूपांतरण - इस अनुवाद में अनुवाद मूल भाषा से लक्ष्यभाषा में केवल शब्द और भाव का अनुवाद नहीं करता अपितु अपनी प्रतिभा और सुविधा के अनुसार मूल रचना का पूरी तरह रूपांतरण कर डालता है, ऐसे रूपांतरण में अनुवाद की मौलिकता सबसे अधिक उभरकर सामने आती है।

हिन्दी अनुवाद के क्षेत्र में चुनौतियां

भाषा का उद्देश्य संवाद स्थापित करना है। यदि वही विफल हो जाए, तो भाषा अनुपयोगी हो जायेगी। एक अच्छे अनुवादक के लिए यह आवश्यक है कि वह जिन दो भाषाओं में अनुवाद करता है, उन दोनों भाषाओं को बोलने वाले लोगों की संस्कृति, इतिहास और मान्यताओं आदि से भी वह परिचित हो, यदि अनुवादक उन दोनों भाषाओं में निपुण नहीं है, तो इस बात की अत्यधिक संभावना है कि वह अभीष्ट संदेश को अपने अनुवाद के माध्यम से व्यक्त कर पाने में सफल नहीं हो सकेगा। प्रत्येक भाषा की अपनी अनूठी संरचना होती है। भाषा की संरचना का अनुवाद की अचूकता और सरलता पर भी प्रभाव पड़ता है। भाषा जितनी सरल होगी, अनुवाद कर पाना भी उतना ही सरल हो जायेगा। उदाहरण - अंग्रेजी के वाक्य 'They eat fruits' यदि हिन्दी में इसका अनुवाद करना हो, तो शब्दों का क्रम बदल जायेगा। और हमें इस प्रकार लिखना पडेगा : 'वे फल खाते है।' लेकिन यदि कोई व्यक्ति केवल शब्दकोश अथवा मशीन टूल की सहायता से अंग्रेजी शब्दों का हिन्दी शब्दों में बदल दे, तो उसका अनुवाद 'वे खाना फल' हो जायेगा, जो व्याकरण की दृष्टि से भी गलत है और पढ़ने में भी अस्पष्ट है।

इसी प्रकार संयुक्त शब्दों का सही अर्थ समझना भी एक महत्त्वपूर्ण चुनौती है। ये दो या अधिक शब्दों से मिलकर बने शब्द होते हैं, किन्तु उनका अर्थ सामान्यतः उनमें से किसी भी शब्द के अर्थ से भिन्न होता है। उदाहरण - अंग्रेजी में एक शब्द 'Bookworm' या हिन्दी में 'किताबी कीड़ा' लेकिन इसका आशय किसी पुस्तक या कीड़े से नहीं है, बल्कि यह ऐसे व्यक्ति के लिए उपयोग किया जाता है, जिसे पुस्तकें पढ़ने का शौक हो। इसी प्रकार मुहावरों तथा कहावतों का अनुवाद

करना संभवतः कठिन कार्य है। इनका अनुवाद करने के लिए उस भाषा से संबंधित संस्कृति से परिचित होना चाहिए। कहावत या मुहावरे का शब्दशः अनुवाद न करके उसी अर्थ वाला कोई मुहावरा या कहावत ढूंढना चाहिए। उदाहरण - A bad workman blames his tools का यदि शब्दशः अनुवाद करें तो इसे 'एक बुरा कारीगर अपने औजारों को दोष देता है।' लिखने से इसमें मूल भावना ही व्यक्त नहीं हो सकेगी और अनुवाद विफल हो जाएगा। अतः हिन्दी में इसका अनुवाद करते समय 'नाच ना जाने आँगन टेढ़ा।' मुहावरे का उपयोग किया जाना चाहिए। इसी प्रकार एक भाषा के शब्द का दूसरी भाषा में सटीक अर्थ न मिलना भी एक चुनौती है। उदाहरण- जब अंग्रेजी में 'pot' शब्द लिखा हो तो इसका अर्थ घट या घड़ा होता है, किन्तु कलश नहीं। यदि हमें कलश के अर्थ में बताना हो तो इसे कोष्टक में इस प्रकार स्पष्ट करना होगा, तब ही श्रेष्ठ अनुवाद हो सकेगा। अनुवाद के क्षे में निम्नलिखित महत्वपूर्ण चुनौत्यिां भी हैं -

1 अनुवाद में मानसिक क्रमबद्धता, एकरूपता तथा सुबोधगम्य करना, यह श्रम का कार्य है ।

2 किसी भी नई जटिल अपरिचित पाठ-सामाग्री का अनुवाद कार्य करना।

3 नवीनतम ग्रंथ सूचीपरक सन्दर्भों की खोज करना।

4 भाषा का प्रत्येक संदर्भ उपलब्ध न होना।

5 नए शब्दों, तकनीकी उत्पादों, संघटनात्मक, संकल्पनापरक परिवर्णी शब्दों के दोनों भाषाओं में समकक्षों को अन्योन्य सन्दर्भों के साथ सूचीबद्ध करना।

6 समसामयिक पुस्तकों, निबन्धों, पत्र-पत्रिकाओं के अनुवाद के सम्बन्ध में लेखक से संपर्क करना।

7 स्रोत भाषा की सामग्री से लक्ष्यभाषा का तादात्म्यीकरण करना।

निष्कर्ष

हिन्दी भाषा में अनुवाद की आवश्यकता हर क्षेत्र में है, जिससे हिन्दी भाषा का साहित्य समृद्ध होगा। साहित्य, संस्कृति के साथ-साथ एक-दूसरे की भावनाओं, सुख-दुःख आदि को समझने में आसानी होगी। अनुवादक को अपने अनुवाद कौशल के लिए दूसरी स्रोत भाषा के साहित्य का गहन अध्ययन करना होगा। अनुवाद में स्पष्टता लाने के लिए समान प्रभाव वाले पर्यायवाची व समानार्थी शब्दों की खोज करना होगी, व्यावहारिक शब्दों के प्रयोग पर बल देना होगा।

संदर्भ ग्रंथ

1 भाटिया (डॉ.) कैलाश चन्द्र, अनुवाद कला : सिद्धान्त और कला, तक्षशिला प्रकाशन, संस्करण 2000 नई दिल्ली

2 अग्रवाल डॉ. कुसुम, अनुवाद शिल्प समकालीन संदर्भ, साहित्य सहकार प्रथम संस्करण 1999 दिल्ली

3 डॉ. हरीमोहन, अनुवाद विज्ञान और सम्प्रेषण, तक्षशिला प्रकाशन, संस्करण 2006 नई दिल्ली

4 राजूरकर डॉ. भ. ह. एवं बोरा डॉ. राजमल, अनुवाद क्या है, वाणी प्रकाशन, संस्करण 1996 नई दिल्ली

5 डॉ. सुरेश कुमार, अनुवाद के सिद्धान्त की रूपरेखा, वाणी प्रकाशन, संस्करण 1996 नई दिल्ली

6 http:// www.blog.sumant.in /translationchallenges/

http:// anuvadkeedunia.blogspot.in/2015/03/t-i.html?m=1

http:// www.scotbuzz.org/2017/05/anuvad-ki-aavashyakata.html?m=1